परमेश्वर की सर्वव्यापकता:

सार में हमारा परमेश्वर ''वहां'' नहीं है

परमेश्वर को ''सर्वव्यापक'' कहा जाता है। इसका अर्थ है कि वह एक ही समय में हर जगह विद्यमान है, या उसका अस्तित्व है। पवित्र शास्त्र भी यही गवाही देता है (यिर्मयाह 23:23, 24)। ऐसा कैसे हो सकता है ? उसमें कौन सी ऐसी बात है ? जब हम कहते हैं कि परमेश्वर हर जगह है, तो इसका अर्थ होता है कि हम संसार के किसी भी कोने में चले जाएं, कहीं भी ''खाली स्थान'' नहीं मिलेगा, क्योंकि वहां भी परमेश्वर है।

इसका तथ्य

संसार बहुत विशाल है। हम अपने दिमाग को इतना विशाल नहीं कर सकते कि वह संसार की सीमाओं तक पहुंच सके। हमारी सौर प्रणाली भी काफी बड़ी है। आपको याद होगा कि जब खगोल शास्त्री नील आर्मस्ट्रांग और ''भौंरा'' एलड्रीन चांद पर उछल-कूद कर रहे थे तो पृथ्वी से लगभग दस करोड़ लोग कितने आनन्द तथा आश्चर्य से उन्हें देख रहे थे ? अब मनुष्य के कदम चांद पर पड़ चुके हैं। खगोलीय भाषा में बेशक चांद पृथ्वी से 2,50,000 मील दूर है, फिर भी यह हमारे घर की पिछली ड्योढ़ी में ही लगता है।

अब, पिछली ड्योढ़ी से बाहर निकलकर आंगन और इसके आस पास देखिए। हमें आकाश में सूर्य दिखाई देता है। यह लगभग 9.3 करोड़ मील दूर है। इसके इर्द-गिर्द आठ और ग्रह घूम रहे हैं। सबसे निकट वाला मरकरी अर्थात बुद्ध ग्रह सूर्य से 3.6 करोड़ मील दूर है; सबसे दूर वाला ग्रह प्लूटो 37 करोड़ मील दूर है। प्लूटो को सूर्य की परिक्रमा करने में लगभग 247 वर्ष लगते हैं। इस लेखक के लिखने तक, खगोल शास्त्रियों का मानना था कि प्लूटो के आगे भी एक ग्रह है। हमारे पिछले आंगन के लिए कितना कुछ है।

आइए बाड़ की ओर जाकर इधर-उधर और ऊपर देखें। जिस रात आसमान साफ़ हो, उस रात हम आकाशगंगा अर्थात गैलेक्सी को देख सकते हैं जिससे हमारे सूर्य तथा ग्रहों का सम्बन्ध है। खगोल शास्त्र में मिलटन ह्यूमसन और एडविन हब्बल की खोज ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि हमारी गैलेक्सी 1,00,000 प्रकाश वर्ष तक फैली हुई है। हब्बल ने यह भी ध्यान दिलाया कि ''निकट की'' कई गैलेक्सियां 10 से 70 प्रकाश वर्ष दूर हैं।[1] इसके अतिरिक्त, जहां तक वर्तमान निरीक्षण से पता चल सकता है, ये गैलेक्सियां (spirals) वास्तव में ''टापू'' गैलेक्सियां हैं जो पूरे संसार में फैली हुई हैं।[2]

शायद हम कुछ ज़्यादा ही दूर निकल गए हैं। संसार की वास्तविक तस्वीर दिमाग को चकरा देने वाली है। यह अतिकाल्पनिक रूप से फैला हुआ है। संसार की विशालता का संकेत इसके माप से ही मिल जाता है। दूरी को मीलों में मापना बहुत ही थका देने वाला तथा अपर्याप्त अभ्यास है। इसलिए दूरी को मापने के लिए प्रकाश वर्ष का इस्तेमाल किया जाता है।

परमेश्वर के स्वभाव के बारे में हमारे अध्ययन के लिए इन सब बातों का बहुत महत्व है। ''प्रकाश वर्ष'' *समय* को बताने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। इसलिए, परमेश्वर को समझने के लिए समय के बारे में हमारे विचार बड़े ही निर्णायक हैं। समय अपने ही स्वभाव से आरम्भ तथा अन्त की सीमाओं में बन्धा है। यदि ऐसा न होता, तो इसे समय न कहकर; अनन्तकाल कहा जाता। ''सर्वव्यापकता'' ''हर समय हर जगह'' परमेश्वर की उपस्थिति का संकेत देती है। परमेश्वर के लिए एक ही समय हर जगह होना सम्भव है क्योंकि संक्षेप में ''परमेश्वर आत्मा है'' (यूहन्ना 4:24क)। इसलिए, सार (बुनियादी अस्तित्व) में, परमेश्वर हर समय हर जगह है। वह उस स्थान पर जाने का जहां वह नहीं है ''फैसला'' नहीं लेता क्योंकि वह तो पहले से ही वहां है! बाइबल के दोनों नियमों में बार-बार इस बात को दोहराया गया है (भजन 2:4; 3:4; प्रेरितों 7:49; 17:28)।

इसके तात्पर्य

परमेश्वर की सर्वव्यापकता की अवधारणा के कई तात्पर्य हैं। ''सर्व'' का अर्थ है बिना किसी रुकावट के विश्वव्यापी; ''सर्वव्यापक'' की परिभाषा ''हर समय हर जगह उपस्थित होना'' के रूप में की जाती है। परमेश्वर सर्वव्यापक है, अर्थात वह हर समय हर जगह विद्यमान है; इसलिए हम इसका यह अर्थ निकालते हैं कि उसकी उपस्थिति से न तो समय और न स्थान बच सकते हैं। अन्य शब्दों में, परमेश्वर पर समय या स्थान का कोई बन्धन नहीं है (2 पतरस 3:8; भजन 139:7-10)। हम शायद समय के सबसे बड़े उदाहरण को ही इतिहास कहते हैं। इतिहास में ''समय आगे बढ़ता जाता है।'' अक्सर हम कहते हैं, ''एक के बाद दूसरी बात होती है।'' हमारे लिए घटनाओं की शृंखला का बड़ा महत्व है, क्योंकि इस पृथ्वी पर हम समय की सीमा में बन्धे हुए जीव हैं।

हमारे लिए स्थान का भी बड़ा महत्व है, क्योंकि हम असीमित नहीं बल्कि सीमित हैं। यहां रहते हुए हम समय और स्थान के बन्धन में बन्धे हुए हैं। हम में से हर कोई भूगोल के पन्ने का एक बिन्दु है। हम ''यहां'' ही होते हैं, ''वहां'' कभी नहीं। एक समय में, हम केवल एक विशेष स्थान पर ही हो सकते हैं। दूसरे समय में, वह स्थान हमारे लिए ''यहां'' होता है, उसे हम अपना ''वहां'' नहीं कह सकते। हम ''वहां'' होने की बात सोच तो सकते हैं परन्तु, किसी विशेष समय या विशेष स्थान पर होने पर हम उसे ''यहां'' ही कह सकते हैं।

यह चर्चा परमेश्वर की असीमितता के साथ हमारे सीमित होने को समझाने और तुलना की कोशिश के लिए की गई है। वह समय या स्थान के द्वारा निवास नहीं करता; यहां हम समय और स्थान के बन्धन में बन्धे हैं। परमेश्वर को समय और स्थान में सीमित नहीं

किया जा सकता क्योंकि वह तो अनादि है (यशायाह 57:15)। वह अपनी सर्वव्यापकता में समय और स्थान दोनों को मापता है। परन्तु, अपने अनन्त स्वभाव में समय और स्थान दोनों से ऊपर है। ***मैं हूं*** कहकर अपने आपको प्रकट करने की उसकी बात का यही महत्व है। *याहवेह* वास्तव में ''होना'' अर्थात अस्तित्व होने की क्रिया का एक रूप है।

अनादि परमेश्वर के रूप में, न तो उसका ''भूत'' है न ही ''भविष्य।'' ''भूत'' और ''भविष्य'' ऐसी धारणाएं हैं जो समय के आवरण में ढकी हुई हैं। समय तथा अनन्तकाल का एक ही अर्थ नहीं है। अनन्तकाल का अर्थ ''लम्बा काल'' नहीं है। अनन्तकाल का अर्थ सदा से *सदा तक* है। इसका न तो कोई आरम्भ है और न ही अन्त। परमेश्वर ''अल्फा और ओमेगा'' (प्रकाशितवाक्य 1:8) है। अर्थात, समय तथा इतिहास में प्रवेश करके उसने हमें अस्थाई वास्तविकता का अर्थ दिया। अन्त में वह समय तथा इतिहास में प्रवेश करेगा और हमें अनन्तकाल का पूर्ण और सही अर्थ देगा। इस तथ्य पर ज़ोर दिया जाना चाहिए कि समय और इतिहास को अस्तित्व में लाने वाला ही समय और इतिहास दोनों से ऊपर है।

सारांश

परमेश्वर का सार आत्मा है। हमने देखा है कि परमेश्वर न केवल समय के भीतर विद्यमान है (अस्थाई रूप से), बल्कि वह संसार में भी (विस्तृत रूप में) सदा विद्यमान है। बाइबल ज़ोर देकर कहती है कि वह अनन्तकाल से है अर्थात किसी सीमा में बन्धा हुआ नहीं है, चाहे वह समय (इतिहास) की हो या स्थान (सृष्टि) की।

समय और स्थान की अपनी सीमित धारणाओं में हम प्राय: कहते हैं कि परमेश्वर ''यहां'' है या ''वहां'' है। हमने देखा था कि बाइबल के लेखक भी ऐसा ही करते हैं। समय और स्थान के बन्धन में पड़े जीवों को चाहिए कि वे परमेश्वर की बात करें। परन्तु, हम परमेश्वर की बात उसके अनादि होने के रूप में भी करते हैं। हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि सार में तो, परमेश्वर ही वह परमेश्वर है जो समय और स्थान के *आगे* के साथ-साथ समय और स्थान *में* भी है। उसके परिपेक्ष्य से, वह तो इस समय ''यहां'' है। हमारे इस प्रश्न के लिए कि ''क्या वह 'वहां' है?'' उसका उत्तर है ''हां, मैं 'यहां' हूं।'' हम संसार के आगे के स्थान (यदि कोई है), स्वयं संसार, हमारे अपने संसार, या हमारे अपने जीवनों के आगे कहीं का भी विचार क्यों कर रहे हों, यह सत्य है कि वह हर जगह है। यही वह परमेश्वर है जिसमें ''हम ... जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं'' (प्रेरितों 17:28)। क्या हमारा परमेश्वर इतना छोटा है? नहीं, परन्तु कम से कम अभी उसे देखने की हमारे अन्दर योग्यता नहीं है।

भजन लिखने वाले ने मनुष्य की सीमाओं और परमेश्वर के असीमित होने को समझा। उसने भजन 139:7-12 में इन धारणाओं को व्यक्त किया:

> मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं?
> वा तेरे साम्हने से किधर भागूं?

यदि मैं आकाश पर चढ़ूं, तो तू वहां है
यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो
वहां भी तू है!
यदि मैं भोर की किरणों पर चढ़कर
समुद्र के पार जा बसूं
तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुआई करेगा,
और अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा।
यदि मैं कहूं कि अन्धकार में तो मैं छिप जाऊंगा,
और मेरे चारों ओर का उजियाला रात का अन्धेरा हो जाएगा,
तौभी अन्धकार तुझ से न छिपाएगा,
रात तो दिन के तुल्य प्रकाश देगी;
क्योंकि तेरे लिए अन्धियारा और उजियाला दोनों एक समान हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]प्रकाशवर्ष, प्रकाश द्वारा 186,000 मील प्रति सैंकड की गति से एक वर्ष में तय की गई दूरी को कहा जाता है। [2]रॉबर्ट जैस्ट्रॉ, *गॉड एण्ड द अस्ट्रोनोमर्स* (न्यू यॉर्क: डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन, 1978), 41 से।